

8

अपनी सुधि भूल आप, आप दुःख उपायौ..

अपनी सुधि भूल आप, आप दुःख उपायौ,
ज्यौं शुक नभचाल विसरि नलिनी लटकायो ॥ अपनी. ॥
चेतन अविरुद्ध शुद्ध, दरश बोधमय विशुद्ध ।
तजि जड-रस-फरस रूप, पुद्गल अपनायौ ॥1॥ अपनी. ॥
इन्द्रियसुख दुःख में नित्त, पाग राग रुख में चित्त ।
दायकभव विपति वृन्द, बन्धको बढायी ॥2॥ अपनी. ॥
चाह दाह दाहै, त्यागौ न ताहि चाहै ।
सुधा न गाहै जिन, निकट जो बतायौ ॥3॥ अपनी. ॥
मानुषभव सुकुल पाय, जिनवर शासन लहाय ।
'दौल' निजस्वभाव भज, अनादि जो न ध्यायौ ॥4॥ अपनी. ॥



जिस प्रकार तोता आकाश में उड़ने रूप अपने स्वभाव को भूलकर नलिनी से लटका रहकर दुःख उठाता है उसी प्रकार, यह जीव स्वयं ही अपने स्वभाव को भूलकर दुःख उठा रहा है ॥टेक॥

यद्यपि यह जीव चैतन्यस्वभाव से अविरोद्ध और शुद्ध दर्शन ज्ञानमय है, विशुद्ध है, फिर भी इसने अपना स्वभाव त्यागकर स्पर्श—रस—वर्ण स्वभाव वाले अचेतन पुद्गल को अपना मान रखा है ॥१॥

यह जीव आज तक हमेशा इन्द्रिय सुख—दुख में ही लगा रहा है, अपने चित्त को राग—द्वेष में ही डुबाकर संसार में दुःख समूह को देने वाले कर्मबंध को ही बढ़ता आ रहा है ॥२॥

इच्छा रूपी अग्नि इसे जला रही है, फिर भी यह उसे छोड़ना नहीं चाहता और जिसे जिनेन्द्रदेव ने अपने अति निकट बताया है उस समतारूपी अमृत में अवगाहन नहीं करता ॥३॥

कविवर दौलतरामजी कहते हैं कि हे भाई! अब इस मनुष्य भव, उत्तम कुल और जिनशासन को प्राप्त करके तू अपने उस आत्मस्वभाव का भजन कर, जिसे तूने अनादि काल से आज तक कभी नहीं ध्याया है ॥४॥

